गरीबी उन्मुलन में फायदेमंद शौचालय की अहम भूमिका

खगड़िया जिले के बाढ़ प्रभावित क्षेत्र उदन घड़ारी के श्री सुबेदार चौधरी ने प्रयोग के दौरान फायदेमंद शौचालय के फायदे को उजागर कर अपने गाँव ही नहीं बल्कि अगल–बगल गांव के लोगों को आश्चर्यचकित तब कर दिया जब उनका नेनुआ (झिंगा) बाजार आने लगा।

गांव का संक्षिप्त परिचय : उदन घड़ारी

खगड़िया जिला अलौली प्रखण्ड अंतर्गत दहमा खैरी खुटहा पंचायत का एक गाँव है। बागमती नदी के कटाव से विस्थापित यह गांव बदला करांची तटबंध के किनारे बसा है। 90 घरों की आबादी वाला यह गाँव मुख्य रूप से हरिजन और अत्यन्त पिछड़ी जातियों का संगम है। महादलित के अलावा करीब 15–20 घर मछुआरों का है। यहाँ की मुख्य पेशा मजदूरी एवं पलायन कर जीविकोपार्जन करना है। बरसात का दस्तक देते ही हर वर्ष उफनती नदी के पानी से चारों ओर घिर जाती है। आवागमन के साधन के बिना तैरकर तटबंध पर आना इनके लिए आदत सी है या मजबूरी है। सरकार की मुख्य धारा से बंचित इस गांव में मेघ पाईन अभियान ने 2006 में शुद्ध पेयजल के साथ–साथ स्वच्छता के सवालों पर काम करना शुरू किया।

चौहद्दी :

पूरब में बागमती नदी
पश्चिम में सूरज नगर
उत्तर में बागमती नदी एवं
द0 में बदला करांची तटबंध।

जनसंख्या : 500 लगभग

जातीय संरचना–

सदा– 70 घर
चौधरी– 20 घर
कुल 90 घर

संसाधन :

मध्य विद्यालय– 1
सौर उर्जा– 1

बागमती नदी– 1

तटबंध– 1

<u>सोचे कैसे बनी ?</u>

लगातार स्वच्छता के सवाल पर ग्रामीणों के साथ मेघ पाईन अभियान के कार्यकर्त्ताओं द्वारा चर्चा एवं बैठक के दौरान सितम्बर 2009 में फायदेमंद शौचालय का निर्माण ग्रामीण और मेघ पाईन अभियान के सहयोग से 4 परिवार ने किया। इस शौचालय का व्यवहार नियमित कैसे करें, लोगों में हमेशा पैखाना के प्रति घृणा और असमंजस की स्थिति बनी रही, यह भी बात सामने आयी कि इसका खाद कैसे बनाऐंगें ? मुख्य बात तो यह था कि इस कन्टर को हाथ से कैसे छुऐंगे, लोग क्या कहेगा ? यह फिजुल वालों का काम है। यह तो इज्जत के खिलाफ बात है। कभी–कभी मेघ पाईन अभियान के कार्यकर्त्ताओं पर बिगड़ भी जाते थे कि आप लोग क्या–क्या करवाना चाहते हैं ? परिणाम यह हुआ कि कन्टर भर जाने के बावजूद भी कई दिनों तक लोग साहस जुटाने में लगे रहे कि कौन व्यक्ति इसको उठाकर अलग जमीन में रखेगा ? 21 अक्टूबर 2009 को मेघ पाईन अभियान के कार्यकर्त्ता वरूण चौधरी ने अपने हाथों से कन्टर को उठाकर एक ऊँचे स्थान पर रख दिया। करीब 10 दिन पश्चात पुनः जमीन के अन्दर मिट्टी खोदकर कन्टर में पड़े मल को डाल कर मिट्टी से ढ़क दिया। धीरे–धीरे घृणा की भावना घटती गयी। पुनः दूसरे बार कन्टर भरने के पश्चात श्रीमति सुलेखा देवी ने यह काम करना शुरू किया। तीन महीन बाद जब मिट्टी को खोदा गया तो सारा पैखाना मिट्टी के समान अर्थात सड़ा गोबर तरह काला जैसा मिट्टी का ढ़ेला बन गया। जिसे तोड़ने पर सिर्फ मिट्टी नजर आता था। जब खोद कर निकाला गया तो 9 किलोग्राम खाद निकाल कर पोलिथिन में रखा गया।

<u>प्रयोग :</u> दिनांक 27 मार्च 2010 को श्री मती सुलेखा देवी जी अपने घर के बगल जमीन 2 कट्ठा जमीन में नेनुआ लगाने के लिए जमीन को जोत कर तैयार किया। जिसमें चालीस दरी (गोल जैसा ऊँचा स्थान) तैयार किया गया। अब बीज 12 घंटे पानी में छोड़ने के पश्चात प्रत्येक दरी में 3 बीज डालकर बोया गया। 3 बीज दरी को तीन भाग में एक–एक दिया गया। जमीन में पूर्व से ही नमी बनाने हेतु सिंचाई की गयी थी। परिणामस्वरूप 7 दिनों में बीज पूरा अफुस देकर जमीन से बाहर निकल आया। पुनः 10 दिनों के बाद उसे जगह की मिट्टी की कैरोनी उसमें फायदेमंद शौचालय द्वारा तैयार किया गया खाद डाला गया। जिसकी मात्रा प्रत्येक दरों में 100 ग्राम के हिसाब से डाला गया। परिणाम स्वरूप देखते–देखते एक सप्ताह में ही पूरे जमीन पौधा लतरना शुरू हो गया। किन्तु जब–जब जमीन लत्ती से भर गया तो पौधे में तना छेदक बीमारी का प्रकोप शुरू हो गया।

उपचार : तब मेघ पाईन अभियान के कार्यकर्त्ता वरूण चौधरी ने 1/2 लीटर पेशाब में 4 लीटर पानी मिलाकर स्प्रे मशीन के आभाव में बाल्टी के द्वारा कपड़ा का ब्रश बनाकर पूरे खेत में छिड़काव कर दिया। परिणाम यह हुआ कि तना छेदक की बीमारी तो खत्म हो ही गया साथ–साथ सारे पौधा में हरियाली अर्थात हर पन छा गया। अप्रैल के आखरी सप्ताह में सारे खेत फूल एवं छोटे–छोटे नेनुओं से भर गया।

अन्तर

बगल के एक किसान श्री शिवन चौधरी एवं शंभू सदा ने भी 3 कट्ठे एवं 7 कट्ठे में नेनुआ (झिंगा) की खेती किए थे। इन दोनों व्यक्तियों ने केमिकल खाद यूरिया का प्रयोग किया। परिणाम यह हुआ कि कुछ पौधा तो जल गया और में वृद्धि कम स्तर पर हुआ। फूल भी छोटा–छोटा हुआ। गांव के लोगों ने श्रीमती सुलेखा देवी के खेत में जमा होकर तमाशा देखने लगे कि आखिर सुलेखा देवी ने कौन साथ खाद डाला कि इनका फसल अच्छा हुआ। और बगल के जमीन में फसल काफी कमजोर हो गया। इसका तर्क–वितर्क लोग खेत बैठकर करने लगे। चर्चा के दौरान यह बात सुलेखा देवी ने बताया कि आपलोग फायदेमंद शौचालय के द्वारा बने खाद से घृणा करते थे और फायदेमंद खाद का ही प्रयोग किया। लोग आश्चर्यचकित हो गए। तब श्री सिंघेश्वर चौधरी उम्र–125 वर्ष बताए कि पहले जमाने में जिस खेत में लोग पखाना अधिक करते था वह जमीन जल्दी नहीं सुखता था उसमें नमी अधिक दिन तक बनी रहती है। इससे बना खाद कम नमीं में डालकर जमीन में मिल जाता है किन्तु यूरिया खाद ज्यादा नमी में गलता है। और नहीं गलने पर पौधे को सुखा देता है। यही कारण है कि आपका पौधा सुख गया और उसमें वृद्धि भी कम हुआ। इस तरह लोगों में प्रयोग के दौरान फायदेमंद खाद के प्रति विश्वास बढ़ा और नहीं प्रयोग के लिए अफसोस भी हुआ। जब श्रीमती सुलेखा देवी का एक नेनुआ 400 गाम के करीब हुआ और सामान्य से काफी लंबा भी था। अगल बगल के गांव **सूरज नगर, नारायणा, सिमराहा, नेपाल टोला** आदि गांव के कुछ लोग देखने आए।

उपज : पहली बार 10 किलो नेनुआ तोड़ा गया जो गांव के लोग ही खरीद लिए जो 12 रू0 प्रति किलो के दर से बिका। दूसरी बार 4 दिनों के पश्चात करीब 24 किलो नेनुआ तोड़ा गया जिसमें 5 किलो अपने ही घ ार में व्यवहार हुआ शेष गांव के लोग ही खरीद लिए। कुछ लोग तो लौट भी जाते थे। तीसरी बार 35 किलो टूटा जिसको बाजार भेजा गया। अब आढ़त वाले कई लोग या झिंगा व्यापारी बात करने लगे कि हमको दिया कीजिए। मैं एडवांस कर देता हूँ। इस तरह से झिंगा की कमाई से 3 क्विंटल मकई खरीदा गया। जिसका कीमत 2700 रू0 था।

<u>परिणाम :</u> नारयणा, सूरजनगर, नेपाल टोला, सिमराहा, वनहेर, कोयलाडीह, खर्ड़ा टोला, जंगली सिंह टोला, आदि गांव में फायदेमंद शौचालय का प्रयोग शुरू

- कई गांवों के लोग फायदेमंद शौचालय को पढ़ने कार्यालय पहुँचते हैं।
- लोग स्वयं के स्तर पर फायदेमंद शौचालय बनाने बात करते हैं।
- फायदेमंद खाद के प्रयोग द्वारा पानी की कम खपत।
- उपज में दोगुना फायदा।
- धीरे–धीरे रसायनिक खाद से छुटकारा होने की सम्भावना ।